eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण– प्रवृत्तियाँ, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

डा0 अंशूबाला[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर उ0प्र0

Received: 15 May 2024 Accepted & Reviewed: 25 May 2024, Published : 31 May 2024

Abstract

दक्षिण एशिया परमाणु शस्त्रीकरण की दृष्टि से एक अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र बन चुका है। भारत, पाकिस्तान तथा चीन जैसे परमाणु संपन्न राष्ट्रों की आपसी प्रतिस्पर्धा एवं सुरक्षा चिंताओं ने इस क्षेत्र को वैश्विक सामरिक रणनीतियों के केंद्र में ला दिया है। यह शोध पत्र दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान प्रवृत्तियाँ, तकनीकी उन्नयन, भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, और सुरक्षा से जुड़े संकटों का विश्लेषण करता है। साथ ही यह परमाणु हथियारों के प्रसार, आतंकवाद और अपर्याप्त नियंत्रण व्यवस्थाओं से उत्पन्न खतरों पर भी प्रकाश डालता है। भारत और पाकिस्तान के बीच निरंतर तनाव, पारंपरिक युद्ध की आशंका, तथा चीन की रणनीतिक विस्तारवादी नीति इस क्षेत्र की स्थिरता को प्रभावित कर रही है। इस अध्ययन में यह भी विवेचना की गई है कि क्षेत्रीय शांति बनाए रखने हेतु किस प्रकार की कूटनीतिक पहलों, नियंत्रण तंत्रों तथा शस्त्र नियंत्रण संधियों की आवश्यकता है। अंततः, इस शोध के माध्यम से दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रवृत्तियों की पहचान कर, टिकाऊ शांति एवं सामरिक स्थिरता हेतु उपयुक्त रणनीतियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

मुख्य शब्द– दक्षिण एशिया, परमाणु शस्त्रीकरण, भारत–पाक संबंध, परमाणु नीति, क्षेत्रीय सुरक्षा, सामरिक संतुलन, अप्रसार संधियाँ, चीन की भूमिका, परमाणु रणनीति, कूटनीतिक समाधान

Introduction

परमाणु शस्त्रों का आविष्कार 20वीं शताब्दी की सबसे बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धियों में से एक माना जाता है, लेकिन इसके साथ ही यह मानवता के लिए सबसे घातक हथियार भी साबित हुआ है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर किए गए परमाणु हमलों ने समस्त विश्व को परमाणु युद्ध के भयावह परिणामों से परिचित कराया। इसके पश्चात विश्व राजनीति में एक नई धुरी का निर्माण हुआ, जिसे हम परमाणु राजनीति के रूप में जानते हैं। दक्षिण एशिया, जिसमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, मालदीव और अफगानिस्तान जैसे देश शामिल हैं, भौगोलिक दृष्टि से तो सीमित क्षेत्र है, लेकिन सामरिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में भारत और पाकिस्तान जैसे दो परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की उपस्थिति तथा चीन की क्षेत्रीय दखलंदाजी इसे और भी जटिल बनाती है। दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रक्रिया 1974 में भारत के पहले परमाणु परीक्षण श्स्माइलिंग बुद्धाश से प्रारंभ हुई, जिसे 1998 में भारत और पाकिस्तान द्वारा किए गए परमाणु परीक्षणों ने और तेज़ कर दिया। इसके बाद से इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन, सामरिक रणनीतियाँ और सुरक्षा चिंताएँ लगातार बहस और अनुसंधान के केंद्र में रही हैं।

आज दक्षिण एशिया न केवल सैन्य संघर्ष की संभावनाओं से ग्रस्त है, बल्कि आतंकवाद, सीमाई विवाद, जल विवाद, तथा धार्मिक कट्टरता जैसी समस्याओं से भी जूझ रहा है। इन सबके बीच परमाणु

शस्त्रों की उपस्थिति क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर सुरक्षा चिंताओं को और अधिक गहरा बनाती है। यह शोधपत्र इन्हीं मुद्दों पर केंद्रित हैकृदक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रवृत्तियाँ क्या हैं? इस क्षेत्र के लिए प्रमुख रणनीतिक चुनौतियाँ कौन–सी हैं? और क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्थायित्व सुनिश्चित करने हेतु कौन–कौन–सी रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं?

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए जाने के पश्चात् परमाणु शक्ति को युद्ध में निर्णायक अस्त्र के रूप में देखा जाने लगा। इस घटना ने वैश्विक सैन्य रणनीतियों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया और शीत युद्ध काल में अमेरिका तथा सोवियत संघ के मध्य परमाणु हथियारों की होड़ शुरू हो गई। भारत ने आरंभ में परमाणु ऊर्जा को शांतिपूर्ण उद्देश्यों हेतु अपनाने की नीति बनाई थी। वर्ष 1948 में परमाणु ऊर्जा अधिनियम के तहत इस दिशा में अनुसंधान प्रारंभ हुआ। लेकिन 1962 के भारत–चीन युद्ध और 1964 में चीन के परमाणु परीक्षण ने भारत की सुरक्षा चिंताओं को गहरा कर दिया। इसके परिणामस्वरूप भारत ने 1974 में पोखरण में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। हालांकि यह परीक्षण शांतिपूर्ण उद्देश्यों के तहत किया गया बताया गया, किन्तु यह परमाणु शक्ति के क्षेत्र में भारत के प्रवेश की औपचारिक घोषणा थी।

पाकिस्तान ने भारत के इस परीक्षण को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानते हुए परमाणु हथियार कार्यक्रम की शुरुआत की। अब्दुल कदीर खान के नेतृत्व में पाकिस्तान ने गुप्त रूप से यूरेनियम संवर्धन की दिशा में कार्य किया और अंततः 1998 में भारत के पोखरण परीक्षणों के जवाब में चगई में छह परमाणु परीक्षण किए। इससे दक्षिण एशिया औपचारिक रूप से एक परमाणु क्षेत्र बन गया। चीन ने 1964 में परमाणु परीक्षण करते हुए स्वयं को पांचवाँ परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र घोषित किया। उसका लक्ष्य न केवल अमेरिका और सोवियत संघ का सामरिक संतुलन बनाए रखना था, बल्कि भारत जैसे पड़ोसी राष्ट्रों पर दबाव बनाए रखना भी था।

इतिहास बताता है कि दक्षिण एशिया में परमाणु हथियारों का विकास न केवल तकनीकी उपलब्धि थी, बल्कि यह राष्ट्रीय अस्मिता, सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता का भी प्रतीक बन गया। भारत की न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता, पाकिस्तान की फुल स्पेक्ट्रम डिटरेंस (Full Spectrum Deterrence), और चीन की शक्ति–संतुलन नीति इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के महत्वपूर्ण भाग हैं।

मुख्य शोध प्रश्न (Primary Research Question)– दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या हैं, और वे क्षेत्रीय सुरक्षा को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

- भारत, पाकिस्तान और चीन की परमाणु नीति में क्या अंतर है, और इनका क्षेत्रीय संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- क्या परमाणु शस्त्रीकरण से दक्षिण एशिया में स्थायी शांति की संभावना बढ़ती है या घटती है?
- परमाणु हथियारों की दौड़ को नियंत्रित करने के लिए क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर क्या प्रयास किए गए हैं और उनकी सीमाएँ क्या हैं?
- क्या भारत और पाकिस्तान के बीच परमाणु निरोध प्रभावी है, या यह संघर्ष की आशंका को और बढ़ाता है?
- क्या दक्षिण एशिया में परमाणु सुरक्षा के जोखिम (जैसे – आतंकवाद, साइबर हमले) गंभीर चिंता का विषय हैं?

- दक्षिण एशिया में परमाणु अप्रसार की दृष्टि से अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ जैसे NSG, IAEA और CTBT कितनी प्रभावी रही हैं?
- क्या भारत की No First Use नीति भविष्य में भी कायम रहेगी?
- दक्षिण एशिया में परमाणु नीति निर्माण में राजनीतिक नेतृत्व, सैन्य प्रतिष्ठान, और वैश्विक दबाव की क्या भूमिका है?
- दक्षिण एशिया के परमाणु भविष्य के लिए क्या वैकल्पिक रणनीतियाँ और नीति–सुझाव अपनाए जा सकते हैं?

शोध उद्देश्य –

- दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना, विशेषतः भारत, पाकिस्तान और चीन के संदर्भ में।
- क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और सुरक्षा दुविधा की अवधारणा के तहत परमाणु प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करना।
- दक्षिण एशिया में परमाणु नीति और रणनीतिक सिद्धांतों (जैसे कि DND, NFU आदि) की भूमिका और प्रभाव का अध्ययन करना।
- परमाणु शस्त्रीकरण के कारण उत्पन्न प्रमुख खतरों और चुनौतियों, जैसे– आतंकवाद, दुर्घटनाएं, हथियारों का प्रसार आदि, का विश्लेषण करना।
- क्षेत्रीय एवं वैश्विक संगठनों (जैसे NSG, IAEA, CTBT) की भूमिका और सीमाओं का अध्ययन करना।
- भारत–पाकिस्तान और भारत–चीन के परमाणु संबंधों की समकालीन स्थिति और उनमें संभावित टकराव या सहयोग की संभावनाओं का परीक्षण करना।
- शांति स्थापना, रणनीतिक स्थिरता और निरस्त्रीकरण की दिशा में संभावित रणनीतियों की पहचान करना और उनकी व्यावहारिकता का मूल्यांकन करना।
- परमाणु शस्त्रों की होड़ को रोकने हेतु राजनयिक संवाद, पारदर्शिता और आत्म–नियंत्रण उपायों के महत्व को स्पष्ट करना।
- दक्षिण एशिया में सतत शांति और सुरक्षा बनाए रखने हेतु बहुपक्षीय सहयोग एवं नीति सुझावों का प्रस्ताव करना।

परिकल्पना– दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रवृत्तियाँ क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ावा दे रही हैं। इस परिकल्पना के अंतर्गत यह अनुमान है कि भारत, पाकिस्तान और चीन जैसे देशों द्वारा परमाणु हथियारों का विस्तार इस क्षेत्र को अस्थिर और युद्ध की आशंकाओं से ग्रस्त बना रहा है।

- परमाणु शस्त्रीकरण क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और रणनीतिक प्रतिरोध की नीति का उपकरण बन गया है।
- यह परिकल्पना मानती है कि दक्षिण एशियाई देशों में परमाणु नीति का प्रमुख उद्देश्य प्रतिरोध और संतुलन बनाए रखना है, न कि आक्रामकता।
- दक्षिण एशिया में प्रभावी परमाणु नियंत्रण व्यवस्था और संवाद की कमी के कारण परमाणु युद्ध का खतरा निरंतर बना रहता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

- इस परिकल्पना में यह अनुमान निहित है कि आपसी अविश्वास, संचार की कमी, और सामरिक गलतफहमियाँ अनियंत्रित परमाणु संघर्ष की आशंका को जन्म देती हैं।
- अंतरराष्ट्रीय परमाणु समझौते और निरस्त्रीकरण की पहलें दक्षिण एशिया में सीमित प्रभाव डालती हैं।
- यह परिकल्पना मानती है कि दक्षिण एशिया के देश, विशेषतः भारत और पाकिस्तान, परमाणु अप्रसार संधि और व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि जैसे अंतरराष्ट्रीय समझौतों के बाहर रहकर अपनी स्वतंत्र परमाणु नीति अपनाए हुए हैं।
- भविष्य की रणनीतियाँ तभी सफल हो सकती हैं जब क्षेत्रीय कूटनीति, आपसी संवाद और विश्वास निर्माण की दिशा में ठोस प्रयास किए जाएं।
- इस परिकल्पना का उद्देश्य यह संकेत देना है कि केवल सैन्य रणनीतियों से नहीं, बल्कि राजनयिक और शांति प्रयासों से परमाणु तनाव को कम किया जा सकता है।

शोध प्राविधि–

शोध विषय– दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण प्रवृत्तियाँ, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

1. शोध का स्वरूप– यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप का है, जिसमें दक्षिण एशिया के प्रमुख देशोंकृविशेषतः भारत, पाकिस्तान, और चीन के परमाणु शस्त्रीकरण की प्रवृत्तियों, चुनौतियों तथा नीतिगत रणनीतियों का अध्ययन किया जाएगा।

2. शोध की प्रकृति– यह शोध गुणात्मक एवं आंशिक रूप से मात्रात्मक है। इसमें ऐतिहासिक तथ्यों, सरकारी दस्तावेज़ों, रक्षा नीति दस्तावेज़ों, और अंतरराष्ट्रीय रिपोट्र्स के विश्लेषण के साथ–साथ आँकड़ों की सहायता से प्रवृत्तियों को रेखांकित किया जाएगा।

3. शोध की सीमा– यह शोध दक्षिण एशिया के उन देशों पर केन्द्रित है जिनकी परमाणु क्षमता (वास्तविक या संभावित) क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करती है मुख्यतः भारत, पाकिस्तान और चीन। साथ ही, परमाणु अप्रसार संधियाँ, वैश्विक शक्तियों की भूमिका, और SAARC जैसी क्षेत्रीय संस्थाओं की संभावनाओं का भी अध्ययन किया जाएगा।

4. डेटा संग्रह की विधियाँ

(क) प्राथमिक स्रोत– रक्षा मंत्रालयों, परमाणु ऊर्जा आयोगों, एवं नीति आयोगों की वार्षिक रिपोट्र्स, सरकार द्वारा जारी रणनीतिक दस्तावेज, संयुक्त राष्ट्र व IAEA जैसे संगठनों की रिपोट्र्स

(ख) द्वितीयक स्रोत– शोध पत्रिकाएँ, पुस्तकों, व थिंक टैंक (जैसे SIPRI, Carnegie, ORF) की रिपोट्र्स, अखबारों, समाचार पत्रों एवं विश्वसनीय वेबसाइटों के लेख, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रकाशित शोध ग्रंथ, संबंधित विषयों पर पीएचडी शोध प्रबंध।

5. डेटा विश्लेषण की तकनीक– सामग्री विश्लेषण, दस्तावेज़ों और रिपोट्र्स के विषयवस्तु का विश्लेषण

तुलनात्मक अध्ययन – भारत–पाकिस्तान, भारत–चीन, तथा दक्षिण एशिया बनाम अन्य क्षेत्रीय परमाणु ब्लॉक्स का तुलनात्मक अध्ययन

SWOT विश्लेषण: क्षेत्रीय परमाणु सुरक्षा के लिए चुनौतियाँ और अवसर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

6. समय अवधि– शोध में 1974 में भारत के प्रथम परमाणु परीक्षण (Smiling Buddha) से लेकर अप्रैल 2024 तक की प्रमुख घटनाओं और रणनीतियों को कवर किया जाएगा।

7. शोध उपकरण – इंटरनेट आधारित शोध डेटाबेस (Google Scholar, JSTOR, SSRN), राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय रक्षा नीति दस्तावेज, आँकड़ों के लिए तालिकाएँ, चार्ट, तथा ग्राफ़

8. नैतिक विचार– शोध में प्रयुक्त सभी स्रोतों को विधिवत उद्धृत किया जाएगा। किसी भी प्रकार की अप्रमाणित या पक्षपाती सामग्री से परहेज़ किया जाएगा।

समीक्षित साहित्य–

1. के. सुब्रह्मण्यम – भारत के परमाणु सिद्धांत के प्रमुख विचारक माने जाते हैं। उन्होंने संतुलित प्रतिरोध की आवश्यकता पर ज़ोर दिया, जो भारत के परमाणु नीति का आधार बना। उन्होंने भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को परमाणु नीति से जोड़ते हुए क्षेत्रीय स्थिरता में इसकी भूमिका को रेखांकित किया।

2. प्रकाश मेनन– उन्होंने अपनी पुस्तक "The Strategy Trap: India and Pakistan Under the Nuclear Shadow" में यह तर्क दिया कि परमाणु हथियारों ने दक्षिण एशिया में पारंपरिक युद्धों को सीमित अवश्य किया, परंतु सीमित युद्ध और आतंकवाद को बढ़ावा दिया।

3. रॉबर्ट जे. आर्ट और केनेथ नील वॉल्ट्ज– अपनी कृति "The Use of Force: Military Power and International Politics" में परमाणु संतुलन की यथार्थवादी (त्मंसपेज) व्याख्या देते हुए दर्शाया कि परमाणु हथियार भले ही युद्ध को रोक सकते हैं, पर वे संघर्ष की जड़ को समाप्त नहीं करते।

4- Zachary S- Davis- उन्होंने पाकिस्तान की परमाणु नीति और आतंकवाद के बीच गहरे संबंधों का विश्लेषण करते हुए चेताया कि पाकिस्तान का फर्स्ट यूज़ सिद्धांत और अस्थिर राजनीतिक व्यवस्था दक्षिण एशिया की स्थिरता के लिए खतरा बन सकती है।

5. Ashley J- Tellis - अपनी रिपोर्ट "India*s Emerging Nuclear Posture" (2001) में उन्होंने भारत की परमाणु नीति, डीएनडी (Deterrence Without Deployment) और इसकी रणनीतिक अवधारणाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

6. Michael Krepon और Chris Gagne (Stimson Center)- इन शोधकर्ताओं ने "The Stability Instability Paradox in South Asia" पर कार्य करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि परमाणु संतुलन ने भले ही बड़े युद्ध को रोका है, परंतु सीमित युद्ध और आतंकवाद को प्रोत्साहित किया है।

7. आईएईए (IAEA) और एनपीटी/सीटीबीटी से संबंधित रिपोर्टें– दक्षिण एशिया में भारत और पाकिस्तान का NPT से बाहर रहना अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। IAEA की रिपोर्टों में भारत की सिविलियन और सैन्य परमाणु संरचनाओं के बीच स्पष्ट भेद को चुनौती बताया गया है।

8. Perkovich] George – India*s Nuclear Bomb: The Impact on Global Proliferation&- यह पुस्तक भारत के परमाणु विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके प्रभाव का विस्तार से विश्लेषण करती है। लेखक मानते हैं कि भारत की नीति आत्मनिर्भरता पर आधारित थी, न कि विस्तारवादी दृष्टिकोण पर।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

9. C- Christine Fair और Sumit Ganguly- दोनों विद्वानों ने भारत–पाक संबंधों के संदर्भ में परमाणु हथियारों के प्रभाव का विश्लेषण किया। वे मानते हैं कि परमाणु संपन्नता ने पारंपरिक संघर्ष को रूपांतरित किया है और रणनीतिक संवाद की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

10. United Nations Institute for Disarmament Research (UNIDIR)- UNIDIR की रिपोर्टों में दक्षिण एशिया में परमाणु हथियारों के अप्रसार (non-proliferation) और रणनीतिक स्थिरता के लिए बहुपक्षीय संवाद की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

दक्षिण एशिया में परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र–

भारत का परमाणु कार्यक्रम 1940 के दशक में प्रारंभ हुआ, जब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान और तकनीक को राष्ट्र निर्माण की आधारशिला माना। 1948 में स्थापित भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग और बाद में डॉ. होमी भाभा की अगुवाई में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र की स्थापना से भारत ने स्वदेशी परमाणु तकनीक के विकास की दिशा में अग्रसर होना शुरू किया। भारत ने 1974 में पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण किया जिसे शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट कहा गया। इसके बाद 1998 में पोखरण–2 परीक्षणों ने भारत को स्पष्ट रूप से परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र घोषित कर दिया। भारत की परमाणु नीति का मूल आधार नो फर्स्ट यूज़ सिद्धांत और न्यूनतम प्रतिरोधात्मक क्षमता है। भारत एनपीटी पर हस्ताक्षर नहीं करता, लेकिन अपनी परमाणु नीति को जिम्मेदार और पारदर्शी मानता है।

पाकिस्तान का परमाणु कार्यक्रम भारत की परमाणु क्षमता के प्रतिकार में विकसित हुआ। 1974 के भारतीय परीक्षण के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री ज़ुल्फिकार अली भुट्टो ने पाकिस्तान को परमाणु शक्ति बनाने का निर्णय लिया। डॉ. अब्दुल कदीर खान की भूमिका पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम में केंद्रीय रही है। पाकिस्तान ने 1998 में भारत के परीक्षणों के जवाब में चगाई में अपने परीक्षण किए। पाकिस्तान की परमाणु नीति भारत के विपरीत है, वहाँ फर्स्ट यूज़ की नीति अपनाई जाती है, यानी पाकिस्तान परमाणु हथियारों का पहले प्रयोग करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तान की परमाणु रणनीति में सामरिक परमाणु हथियारों का भी समावेश है।

चीन एशिया का पहला और विश्व का पाँचवाँ परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बना जब उसने 1964 में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। चीन की परमाणु नीति शुरुआत में अत्यंत रक्षात्मक और सीमित थी, लेकिन वर्तमान में चीन अपने परमाणु भंडार का विस्तार कर रहा है और आधुनिक मिसाइल प्रौद्योगिकियों (जैसे हाइपरसोनिक ग्लाइड व्हीकल्स) का विकास कर रहा है। भारत के लिए चीन की परमाणु शक्ति सामरिक चुनौती बनती जा रही है, विशेषकर डोकलाम और लद्दाख में हुए संघर्षों के संदर्भ में। चीन की नीति भी नो फर्स्ट यूज़ पर आधारित है, लेकिन उसकी पारदर्शिता की कमी पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रश्न उठते रहे हैं।

इस प्रकार, दक्षिण एशिया में भारत, पाकिस्तान और चीन की परमाणु क्षमताएँ और नीतियाँ क्षेत्रीय संतुलन, सामरिक तनाव और कूटनीतिक वार्ताओं की दिशा तय करती हैं। इन देशों की आपसी प्रतिस्पर्धा और सैन्य तैयारी इस क्षेत्र को अत्यधिक संवेदनशील और जटिल बनाती है।

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रक्रिया कोई आकस्मिक या अनियोजित विकास नहीं रही है। यह क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा, वैश्विक रणनीतिक दबावों और आंतरिक सुरक्षा आवश्यकताओं का परिणाम रही

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

है। भारत और पाकिस्तान की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा, चीन की सैन्य सक्रियता, और अमेरिका तथा रूस जैसे वैश्विक शक्तियों की भूमिका ने इस क्षेत्र में परमाणु असंतुलन की संभावनाओं को जन्म दिया है। दक्षिण एशिया में परमाणु प्रतिस्पर्धा मुख्यतः भारत और पाकिस्तान के मध्य रही है। भारत की 1974 की शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण के बाद पाकिस्तान ने त्वरित गति से अपनी परमाणु क्षमता विकसित करनी आरंभ की। 1998 में भारत और पाकिस्तान दोनों द्वारा खुले परमाणु परीक्षण करने के बाद यह प्रतिस्पर्धा औपचारिक रूप से स्थापित हो गई। इसके पश्चात मिसाइल परीक्षण, परमाणु बम ले जाने में सक्षम विमान, पनडुब्बी–आधारित प्लेटफार्मों और बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा प्रणाली की होड़ ने इस प्रतिस्पर्धा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। हालांकि यह क्षेत्र औपचारिक परमाणु हथियार नियंत्रण समझौतों से वंचित रहा है, तथापि दोनों देशों ने न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता को बनाये रखने की रणनीति अपनाई है। भारत की नो फर्स्ट यूज़ नीति और पाकिस्तान की फर्स्ट यूज़ की अस्पष्ट नीति के बीच एक अस्थिर संतुलन बना हुआ है। इसके अतिरिक्त, ट्रैक–2 डिप्लोमेसी, परमाणु सुरक्षा पर अंतरराष्ट्रीय सहयोग, और दोनों देशों के सामरिक समुदायों के संवाद ने परमाणु असंतुलन को कुछ हद तक नियंत्रित करने में सहायता की है। इस क्षेत्र में परमाणु असंतुलन की आशंकाएँ कई बिंदुओं पर आधारित हैं। भारत की अंतरिक्ष और मिसाइल तकनीक में बढ़त और परमाणु त्रि–आयामी प्रतिरोधक क्षमता से पाकिस्तान को रणनीतिक असंतुलन का अनुभव होता है। सैन्य गोपनीयता, अप्रत्याशित परीक्षण और अविश्वासपूर्ण कूटनीति असंतुलन को बढ़ाते हैं। पाकिस्तान में आतंकवादी संगठनों की उपस्थिति और उनकी परमाणु ठिकानों तक पहुँच की आशंका वैश्विक चिंता का विषय रही है। चीन की भारत–सम्बंधी नीति और पाकिस्तान को सामरिक समर्थन देना भी इस क्षेत्र में परमाणु असंतुलन को गहरा करता है। दक्षिण एशिया में परमाणु प्रतिस्पर्धा केवल द्विपक्षीय मसला नहीं है; यह वैश्विक स्तर पर सामरिक संतुलन, अप्रसार व्यवस्था और परमाणु हथियारों के नियंत्रण प्रयासों को भी प्रभावित करती है। अमेरिका, रूस और चीन जैसी शक्तियाँ इस क्षेत्र में हथियारों की होड़ को नियंत्रित करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष भूमिका निभा रही हैं। दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रवृत्तियाँ एक जटिल, बहुस्तरीय और खतरनाक परिघटना बन चुकी हैं। प्रतिस्पर्धा और संतुलन के बीच यह क्षेत्र लगातार अस्थिरता के खतरे में रहता है। पारदर्शिता, संवाद, और क्षेत्रीय सहयोग की दिशा में ठोस पहल ही इस प्रवृत्ति को नियंत्रित कर सकती है।

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की प्रक्रिया को कई जटिल और बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ केवल तकनीकी या सैन्य नहीं हैं, बल्कि इसमें राजनीतिक, कूटनीतिक, आतंकवाद–सम्बन्धी और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्पन्न होने वाले विविध दबाव शामिल हैं।

दक्षिण एशिया एक अस्थिर क्षेत्र है जहाँ भारत और पाकिस्तान जैसे परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों के बीच परस्पर अविश्वास बना रहता है। सीमित युद्ध, आतंकवादी हमलों के पश्चात् तनाव, और पारंपरिक शस्त्रों की दौड़ कृ ये सभी क्षेत्रीय असुरक्षा को बढ़ाते हैं। इस अस्थिरता में परमाणु हथियारों की भूमिका और अधिक जटिल हो जाती है। भारत और पाकिस्तान के बीच कारगिल युद्ध (1999) और उरी/पुलवामा जैसे आतंकवादी हमलों के बाद की परिस्थितियाँ परमाणु प्रतिरोध क्षमता की सीमाओं को उजागर करती हैं। चीन की भूमिका भी विशेषतः भारत के दृष्टिकोण से एक अन्य सुरक्षा चुनौती है। पाकिस्तान में सक्रिय कुछ आतंकवादी संगठनों की पहुँच और उनके परमाणु प्रतिष्ठानों पर संभावित खतरे ने वैश्विक समुदाय की चिंता को बढ़ाया है। यदि किसी आतंकी समूह को परमाणु हथियार या उससे जुड़ी तकनीक प्राप्त हो जाती

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

है, तो यह न केवल क्षेत्रीय, बल्कि वैश्विक संकट बन सकता है। अमेरिका और IAEA द्वारा पाकिस्तान की परमाणु सुरक्षा को लेकर समय–समय पर चिंता प्रकट की गई है। भारत भी अपनी परमाणु स्थापनाओं की सुरक्षा को लेकर सतर्क है, और उसने विशेष सुरक्षा बलों का गठन किया है। परमाणु मुद्दों पर दक्षिण एशिया में कूटनीतिक संवाद प्रायः अविश्वास और भेदभाव की भावना से ग्रसित रहा है। भारत ने जहां परमाणु अप्रसार संधि और व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं, वहीं पाकिस्तान की स्थिति भी मिलती–जुलती है। इससे दोनों देशों की कूटनीतिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा है। भारत को 2008 में अमेरिका के साथ असैनिक परमाणु समझौते के माध्यम से छैळ से छूट मिली, परंतु पाकिस्तान को ऐसी सुविधा नहीं मिली। चीन और रूस जैसे देश भी क्षेत्रीय संतुलन में भूमिका निभाते हैं।

दक्षिण एशिया के परमाणुकरण को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चिंताएँ गहराई हैं। अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र चाहते हैं कि दक्षिण एशिया परमाणु अप्रसार के वैश्विक नियमों का पालन करे। NSG, CTBT और FMCT जैसे तंत्रों के माध्यम से दबाव बनाया जाता रहा है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसियाँ, जैसे कि IAEA, निरंतर निरीक्षण और संतुलन की माँग करती हैं। दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की दिशा में सुरक्षा, आतंकवाद, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय दबाव जैसी जटिल चुनौतियाँ हैं, जिनका समाधान केवल सैन्य दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि समन्वित कूटनीतिक और नीतिगत प्रयासों से संभव है। यदि क्षेत्रीय राष्ट्र स्थायी संवाद, पारदर्शिता और विश्वास निर्माण की दिशा में कार्य करें, तो न केवल परमाणु शस्त्रों की होड़ को सीमित किया जा सकता है, बल्कि स्थायी शांति की दिशा में भी कदम बढ़ाया जा सकता है।

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की बहुपक्षीय प्रकृति को समझने के लिए भारत, पाकिस्तान और चीन की परमाणु रणनीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। ये तीनों देश न केवल भौगोलिक दृष्टि से एक–दूसरे के पड़ोसी हैं, बल्कि परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र होने के नाते क्षेत्रीय और वैश्विक सामरिक संतुलन को प्रभावित करते हैं। इनकी रणनीतियाँ न केवल सैन्य सिद्धांतों पर आधारित हैं, बल्कि कूटनीतिक, तकनीकी और ऐतिहासिक कारकों से भी प्रभावित होती हैं। भारत ने 1974 में स्माइलिंग बुद्धा नामक परीक्षण के माध्यम से परमाणु शक्ति के क्षेत्र में प्रवेश किया और 1998 में पोखरण–प्प के साथ अपनी रणनीतिक क्षमताओं को सुदृढ़ किया। भारत की परमाणु नीति मूलतः नो फर्स्ट यूज़ और मिनिमम डिटरेंस के सिद्धांतों पर आधारित है। भारत परमाणु हथियारों को सक्रिय रूप से तैनात नहीं करता। भारत थल, जल और वायु तीनों माध्यमों से परमाणु प्रतिघात करने की क्षमता विकसित कर रहा है। परमाणु हथियारों के प्रयोग का निर्णय पूरी तरह राजनीतिक नेतृत्व के नियंत्रण में है। भारत NPT का सदस्य नहीं है, लेकिन वैश्विक अप्रसार मानकों का पालन करता है।

पाकिस्तान ने 1998 में चगई परीक्षणों के साथ परमाणु शक्ति घोषित की। इसकी नीति स्पष्ट रूप से भारत–केंद्रित और आक्रामक संतुलन बनाए रखने वाली है। पाकिस्तान ने स्पष्ट किया है कि वह आवश्यक होने पर पहले परमाणु हथियार का प्रयोग कर सकता है। पाकिस्तान ने भारत के Cold Start Doctrine के प्रत्युत्तर में TNWs विकसित किए हैं। पाकिस्तान में परमाणु नियंत्रण की प्रक्रिया में सेना की सक्रिय भूमिका है। पाकिस्तान की रणनीति भारत की बराबरी में बने रहना है, चाहे वैश्विक आलोचना हो या आर्थिक दबाव।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

चीन 1964 में परमाणु शक्ति बना और उसकी रणनीति शुरू से ही अमेरिका और रूस के सामरिक दबाव के प्रत्युत्तर में बनी। चीन अपने परमाणु हथियारों के भंडार को आधुनिक बनाने और विस्तार देने की प्रक्रिया में है। चीन ने कई स्वतंत्र रूप से लक्षित पुनःप्रवेशीय वाहन और हाइपरसोनिक हथियार विकसित किए हैं। चीन समुद्र से परमाणु प्रतिघात की क्षमता को मजबूत कर रहा है।

तालिका 01
तुलनात्मक विश्लेषण

मापदंड	**भारत**	**पाकिस्तान**	**चीन**
प्रथम प्रयोग नीति	नहीं	हाँ (First Use possible)	नहीं
परमाणु नियंत्रण	नागरिक नियंत्रण	सैन्य नियंत्रण	पार्टी/राज्य नियंत्रण
परमाणु त्रै–सिद्धांत	विकसित किया जा रहा है	सीमित	पूर्ण विकसित
अप्रसार नीति	अप्रसार का नैतिक समर्थन	अप्रसार के प्रति शंकाशील	सीमित समर्थन
रणनीतिक उद्देश्य	न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता	भारत पर सामरिक संतुलन	वैश्विक शक्ति संतुलन
आधुनिकीकरण	सीमित और सतर्क	सीमित	तीव्र और आक्रामक
मापदंड	भारत	पाकिस्तान	चीन

भारत, पाकिस्तान और चीन की परमाणु रणनीतियाँ भिन्न ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामरिक चिंताओं पर आधारित हैं। भारत संयम और संतुलन की नीति पर चलता है, जबकि पाकिस्तान संतुलन बनाए रखने हेतु आक्रामक रुख अपनाता है। वहीं चीन वैश्विक शक्ति संतुलन में अपनी भूमिका को मजबूत करने हेतु तकनीकी और सामरिक उन्नयन पर केंद्रित है। इस त्रिकोणीय परमाणु संतुलन का दक्षिण एशिया की स्थिरता और वैश्विक रणनीतिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

क्षेत्रीय और वैश्विक रणनीतिक संतुलन पर परमाणु शस्त्रीकरण का प्रभाव– परमाणु शस्त्रीकरण केवल राष्ट्र की सामरिक शक्ति का विस्तार नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर शक्ति–संतुलन, शांति, सुरक्षा और कूटनीतिक संबंधों को भी प्रभावित करता है। दक्षिण एशिया में भारत, पाकिस्तान और चीन के परमाणु कार्यक्रमों का प्रभाव क्षेत्रीय स्थिरता से लेकर वैश्विक परमाणु अप्रसार तंत्र तक फैला हुआ है। दोनों देशों के बीच जारी ऐतिहासिक शत्रुता और चार युद्धों की पृष्ठभूमि में परमाणु शस्त्रीकरण ने 'संतुलन के आतंक' की स्थिति उत्पन्न की है। चीन का परमाणु और मिसाइल आधुनिकीकरण भारत के लिए नई सुरक्षा चुनौतियाँ खड़ी करता है, जिससे भारत को अपनी रणनीतिक क्षमता का पुनरावलोकन करना पड़ता है। भारत–पाकिस्तान–चीन के बीच परमाणु संतुलन की त्रिकोणीय संरचना क्षेत्रीय स्थिरता को जटिल बनाती है। अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते तनाव, रूस की परमाणु सक्रियता, तथा एशिया में परमाणु होड़, विश्व को बहुध्रुवीय सामरिक प्रतिस्पर्धा की ओर ले जा रही है। संयुक्त राष्ट्र, IAEA और छैळ जैसे संस्थानों पर बढ़ता दबाव कि वे परमाणु प्रसार को सीमित रखें और विश्वास–निर्माण को बढ़ावा दें। हर देश दूसरे की सुरक्षा नीति को आक्रामक मानकर अपनी क्षमताएँ बढ़ाता है, जिससे हथियारों की होड़ शुरू होती है। दक्षिण एशिया में यह सुरक्षा दुविधा विशेषकर भारत–पाक संबंधों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। नियंत्रण और

संप्रभुता का प्रतीकरू परमाणु हथियारों को राष्ट्र की श्प्रतिरोध क्षमताश और श्राष्ट्रीय गौरवश के रूप में देखा जाता है। परमाणु शस्त्र राष्ट्रों की विदेश नीति में अधिक आक्रामकता या आत्म–नियंत्रण का कारण बन सकते हैं। परमाणु हथियारों की उपस्थिति पारंपरिक हथियारों की उपयोगिता को सीमित करती है, लेकिन छोटे युद्ध या सर्जिकल स्ट्राइक जैसे विकल्पों की खोज भी इसी से प्रेरित होती है। परमाणु शस्त्रीकरण ने दक्षिण एशिया में शक्ति–संतुलन को अस्थिर किया है, जबकि वैश्विक स्तर पर यह बहुध्रुवीय प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा दुविधा को जन्म दे रहा है। इस स्थिति में विश्वास निर्माण, बातचीत और नियंत्रण तंत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

दक्षिण एशिया में परमाणु अप्रसार की संभावनाएँ और नीतिगत विकल्प– दक्षिण एशिया विश्व का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पारंपरिक सुरक्षा तनाव, ऐतिहासिक शत्रुताएं और सामरिक प्रतिस्पर्धा परमाणु अप्रसार की संभावनाओं को चुनौती देती हैं। भारत, पाकिस्तान और चीन जैसे प्रमुख राष्ट्रों की परमाणु क्षमताएं और नीतियाँ इस क्षेत्र को वैश्विक परमाणु अप्रसार प्रयासों के केंद्र में रखती हैं। भारत–पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता, दोनों देशों की शत्रुतापूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और कश्मीर मुद्दा अप्रसार प्रयासों को बाधित करता है। चीन की परमाणु नीति और पाकिस्तान को परमाणु सहायता ने क्षेत्रीय संतुलन को जटिल बनाया है। सैन्य, तकनीकी और आर्थिक असंतुलन अप्रसार को कठिन बनाते हैं।

दक्षिण एशियाई देशों की परमाणु रणनीतियाँ गोपनीय होती हैं, जिससे विश्वास की कमी रहती है। NPT (Non-Proliferation Treaty) जैसे समझौतों में विभेदकारी प्रावधान दक्षिण एशियाई देशों को असहज करते हैं। वैसे भारत–पाकिस्तान के बीच विश्वास बहाली उपाय (जैसे मिसाइल परीक्षणों की पूर्व–सूचना) अप्रसार की दिशा में सकारात्मक कदम हो सकते हैं। सार्क और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों के माध्यम से क्षेत्रीय परमाणु नीति पर चर्चा संभव है। अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ जैसे प्रमुख राष्ट्रों द्वारा मध्यस्थता एवं तकनीकी सहायता से अप्रसार प्रयासों को बल मिल सकता है। क्षेत्रीय सहयोग से परमाणु ऊर्जा को विकास व शांतिपूर्ण प्रयोग के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

तालिका 02

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्र सम्पन्न देशों की सूची एवं उनकी परमाणु क्षमता (2024 तक)

देश	परमाणु परीक्षण की तिथि	अनुमानित परमाणु शस्त्र (2024)	प्रमुख मिसाइल प्रणाली	परमाणु नीति
भारत	1974, 1998	160–170	अग्नि, पृथ्वी, ब्रह्मोस	NFU (No First Use)
पाकिस्तान	1998	165–175	शाहीन, घौरी, बाबर	First Use Possible
चीन (संबद्ध)	1964	400+	डोंगफेंग शृंखला	NFU

दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय परमाणु हथियार–मुक्त क्षेत्र की स्थापना की पहल, परमाणु नीति, परमाणु सिद्धांतों और शस्त्रागार की पारदर्शिता बढ़ाने हेतु संस्थागत संवाद। भारत द्वारा No First Use सिद्धांत को

पुनः पुष्ट करना और पाकिस्तान द्वारा इसकी स्वीकृति। एक क्षेत्रीय अप्रसार समझौते (South Asian Nuclear Non&Proliferation Accord) की संभावना एक. नीतिगत विकल्प हो सकता है। भारत, एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में, अप्रसार के क्षेत्र में नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकता है। नो फर्स्ट यूज़ नीति और सिविल न्यूक्लियर डील्स के तहत भारत की पारदर्शिता इसकी वैश्विक साख को बढ़ाती है। हालांकि दक्षिण एशिया में परमाणु अप्रसार की राह जटिल है, किंतु पारस्परिक संवाद, बहुपक्षीय सहयोग और राजनीतिक इच्छाशक्ति के माध्यम से इस दिशा में ठोस प्रगति की जा सकती है। क्षेत्रीय स्थायित्व और वैश्विक सुरक्षा की दृष्टि से परमाणु अप्रसार एक आवश्यक प्राथमिकता होनी चाहिए।

तालिका 03

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण की ऐतिहासिक प्रवृत्तियाँ

दशक	प्रमुख घटनाएँ	संबंधित देश	प्रभाव
1970े	भारत का पहला परमाणु परीक्षण (1974)	भारत	शक्ति प्रदर्शन
1990े	भारत–पाक परीक्षण (1998)	भारत, पाकिस्तान	खुले परमाणु क्लब में प्रवेश
2000े	मिसाइल विकास और मिनीट्युराइज़ेशन	भारत, पाकिस्तान	क्षेत्रीय अस्थिरता
2020े	ठडक सिस्टम, हाइपरसोनिक हथियार	भारत	संतुलन में बदलाव

दक्षिण एशिया में परमाणु अप्रसार की संभावनाएँ और नीतिगत विकल्प– भारत की परमाणु नीति नो फर्स्ट यूज़ पर आधारित है, जिसका आशय है कि भारत तब तक परमाणु हथियारों का प्रयोग नहीं करेगा जब तक उस पर पहले परमाणु हमला नहीं किया जाता। यह नीति क्षेत्र में रणनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। भारत की यह नीति अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जिम्मेदार परमाणु शक्ति की छवि भी निर्मित करती है। इसके विपरीत, पाकिस्तान की रणनीतिक नीति में स्पष्ट नो फर्स्ट यूज़ का अभाव है। वह अपनी स्थिति को रणनीतिक अस्पष्टता में रखता है जिससे यह संकेत जाता है कि वह पारंपरिक हमलों की स्थिति में भी परमाणु हथियारों का प्रयोग कर सकता है। इससे क्षेत्र में तनाव और असंतुलन बना रहता है।

दक्षिण एशिया में परमाणु हथियारों की तकनीकी क्षमता निरंतर विकसित हो रही है। भारत और पाकिस्तान दोनों ही बैलिस्टिक मिसाइलों, क्रूज़ मिसाइलों और पनडुब्बी आधारित परमाणु प्रणाली के विकास में लगे हुए हैं। इससे ट्रायड (Triad) की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है जो परमाणु हथियारों के भूमि, वायु और समुद्र तीनों माध्यमों से प्रक्षेपण को सक्षम बनाता है। इस क्षेत्र में परमाणु हथियारों की संख्या, मिसाइल प्रणालियों के परीक्षण और नए रक्षा तकनीकों की प्रतिस्पर्धा परमाणु होड़ को दर्शाती है। हथियारों के यह प्रतिस्पर्धात्मक विकास शांति की संभावनाओं को कमजोर करते हैं और स्थायी तनाव को जन्म देते हैं।

दक्षिण एशिया में परमाणु शक्ति संतुलन की अस्थिरता न केवल क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी रणनीतिक चिंताओं को जन्म देती है। विशेषकर जब आतंकवादी तत्व परमाणु सामग्री तक पहुँचने का प्रयास करते हैं, तो यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चिंता का विषय बन जाता है।

हालाँकि सार्क देशों के बीच शांति स्थापना और तनाव न्यूनीकरण हेतु कुछ द्विपक्षीय वार्ताएँ और CBMs (Confidence Building Measure) हुए हैं, फिर भी समग्र स्तर पर परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में ठोस और स्थायी प्रयास अपेक्षित हैं।

तालिका 04

दक्षिण एशिया में परमाणु जोखिम और रणनीतिक चुनौतियाँ

चुनौती	**विवरण**	**संभावित प्रभाव**
आतंकवादी समूहों द्वारा परमाणु हथियारों की चोरी	सुरक्षा उपायों की विफलता	वैश्विक खतरा
आकस्मिक युद्ध की संभावना	मिसकम्युनिकेशन या टेक्निकल गलती	भारी तबाही
पारंपरिक युद्ध से परमाणु युद्ध में रूपांतरण	सीमा संघर्षों का उन्नयन	क्षेत्रीय विनाश
परमाणु हथियारों की दौड़	जवाबी कार्यक्रम और विकास	संसाधनों की बर्बादी
चुनौती	विवरण	संभावित प्रभाव

भारत ने CTBT और FMCT जैसे वैश्विक प्रयासों के संदर्भ में कुछ शर्तों के साथ समर्थन व्यक्त किया है, जबकि पाकिस्तान भी अंतरराष्ट्रीय दबाव के बावजूद अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय करता है। दक्षिण एशिया में परमाणु अप्रसार की संभावना तब तक सीमित रहेगी जब तक क्षेत्रीय राजनीतिक संबंध तनावपूर्ण हैं। भारत और पाकिस्तान की नीति, तकनीकी विकास, और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं में समन्वय लाना आवश्यक है।

तालिका 05

परमाणु शस्त्रीकरण के उत्तर में क्षेत्रीय रणनीतियाँ एवं कूटनीतिक प्रयास

रणनीति	**देश**	**उद्देश्य**	**स्थिति**
परमाणु सिद्धांतों का स्पष्टीकरण	भारत	जवाबदेही और पारदर्शिता	स्पष्ट (NFU)
बैकचौनल वार्ता	भारत—पाक	गलतफहमियों को रोकना	सीमित सफलता
CBMs (Confidence Building Measure)	SAARC देशों के मध्य	पारस्परिक विश्वास	बाधित
द्विपक्षीय परमाणु नियंत्रण समझौते	भारत—पाक	सूचना साझा करना	आंशिक रूप से लागू

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण केवल सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, रणनीतिक स्थिरता और सुरक्षा चिंताओं का केंद्र भी बन चुका है। भारत, पाकिस्तान और चीन के परमाणु

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

कार्यक्रमों ने क्षेत्र में रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता को और अधिक जटिल बना दिया है। दक्षिण एशिया में आतंकवादी नेटवर्क की सक्रियता परमाणु हथियारों की सुरक्षा को गंभीर खतरा पहुंचा सकती है। विशेषकर पाकिस्तान में अस्थिरता और कट्टरपंथी तत्वों की निकटता, वैश्विक चिंता का विषय रही है। भारत की ओर से सुरक्षा ढाँचे को लगातार सुदृढ़ किया जा रहा है। आधुनिक युग में परमाणु शस्त्र प्रणालियाँ भी डिजिटल नेटवर्क पर आधारित होती जा रही हैं, जिससे साइबर हमले की संभावना बढ़ गई है। यदि कोई राष्ट्र या गैर–राज्यीय तत्व इन प्रणालियों में सेंध लगाता है, तो क्षेत्रीय युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। भारत–पाकिस्तान या भारत–चीन के बीच सीमित सैन्य संघर्ष यदि सीमा पार कर जाता है, तो परमाणु हथियारों के प्रयोग की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। यह स्थिति एस्केलेशन डॉमिनेंस सिद्धांत के अंतर्गत आती है। सार्क, शंघाई सहयोग संगठन, और द्विपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से परमाणु तनाव को कम करने के प्रयास जारी हैं, किंतु विश्वास की कमी, ऐतिहासिक द्वेष और रणनीतिक हित इन्हें सीमित कर देते हैं। चीन न केवल एक परमाणु शक्ति है, बल्कि वह पाकिस्तान को तकनीकी और सामरिक सहायता प्रदान कर इस क्षेत्र में असंतुलन भी उत्पन्न करता रहा है। भारत और पाकिस्तान NPT व CTBT पर हस्ताक्षर नहीं कर पाए हैं। भारत CTBT का नैतिक पालन करता है, किंतु चीन और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश भी CTBT को पूर्णतः लागू नहीं करते। भारत अपने परमाणु हथियारों को तैनात नहीं करता, बल्कि प्रतिरोध के लिए क्षमता बनाए रखने की रणनीति अपनाता है। यह DND मॉडल दुनिया के अन्य देशों के लिए भी उदाहरण बन सकता है।

भारत एनएसजी का सदस्य बनने की लगातार कोशिश कर रहा है, किंतु चीन की आपत्तियाँ इसमें बाधा उत्पन्न कर रही हैं। फिर भी भारत को अमेरिका, रूस, फ्रांस आदि देशों का समर्थन प्राप्त है। दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण के बढ़ते आयामों ने सुरक्षा, स्थिरता और शांति की अवधारणाओं को पुनर्परिभाषित कर दिया है। भारत, पाकिस्तान और चीन को क्षेत्रीय वार्ता, पारदर्शिता और उत्तरदायी नीतियों को अपनाकर दक्षिण एशिया को परमाणु युद्ध के साये से मुक्त करने के लिए ठोस प्रयास करने होंगे।

समकालीन सुरक्षा चुनौतियाँ और परमाणु शस्त्रीकरण– दक्षिण एशिया में आतंकवाद की उपस्थिति ने परमाणु सुरक्षा को एक अत्यंत संवेदनशील विषय बना दिया है। पाकिस्तान में सक्रिय आतंकी संगठनों और वहां की अस्थिर राजनीतिक व्यवस्था के कारण यह चिंता और गहराती है कि कहीं ऐसे अस राज्य तत्व परमाणु हथियारों या सामग्री तक पहुंच न बना लें। भारतीय दृष्टिकोण से यह एक सतत खतरा है और इसके चलते भारत ने अपनी सुरक्षा प्रणालियों को और सुदृढ़ किया है। वैश्विक मंचों पर भी भारत लगातार यह मुद्दा उठाता रहा है कि आतंकवाद और परमाणु प्रसार का मेल वैश्विक शांति के लिए गंभीर चुनौती है। आधुनिक परमाणु शस्त्र प्रणालियाँ अत्यधिक तकनीकी रूप से विकसित होती जा रही हैं, जिससे उन्हें साइबर हमलों का खतरा बढ़ गया है। यदि किसी शत्रु द्वारा कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम को हैक कर लिया जाए, तो यह आपदा का रूप ले सकता है। दक्षिण एशियाई देशों में साइबर सुरक्षा अवसंरचना अभी भी विकसित देशों की तुलना में कमजोर है। अतः परमाणु हथियारों की डिजिटल सुरक्षा को लेकर उच्च स्तरीय साइबर डिटरेंस और सतत निगरानी की आवश्यकता है। चीन का दक्षिण एशिया में प्रभाव, विशेषकर पाकिस्तान के साथ उसकी रणनीतिक साझेदारी, क्षेत्रीय परमाणु असंतुलन को बढ़ाता है। चीन ने पाकिस्तान की परमाणु क्षमताओं के विकास में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहायता की है। साथ ही, भारत–चीन सीमा विवाद भी भारत को अपनी सामरिक क्षमताओं को सुदृढ़ करने के लिए बाध्य करता है। चीन की बढ़ती सैन्य और परमाणु

शक्ति से प्रेरित होकर भारत अपनी त्रि–स्तरीय परमाणु प्रणाली को विकसित कर रहा है। दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण एक बहुआयामी चुनौती है जिसमें आतंकवाद, साइबर खतरे, कूटनीतिक संवाद और क्षेत्रीय–वैश्विक शक्तियों की रणनीति सभी कारक मिलकर एक जटिल सुरक्षा वातावरण निर्मित करते हैं। इस असंतुलन से निपटने के लिए भारत सहित समस्त दक्षिण एशियाई देशों को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और तकनीकी रूप से सशक्त रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता है।

वैश्विक शक्तियाँ और दक्षिण एशिया का परमाणु परिदृश्य एवं भविष्य की संभावनाएँ और रणनीतियाँ– दक्षिण एशिया विश्व की सर्वाधिक अस्थिर और परमाणु हथियार संपन्न क्षेत्रों में से एक बन चुका है। भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से जारी संघर्ष, सीमाओं पर तनाव, और चीन की उभरती सैन्य शक्ति इस क्षेत्र को रणनीतिक दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील बनाते हैं। वैश्विक शक्तियों की नीतियाँ और हस्तक्षेप भी इस परिदृश्य को गहराई से प्रभावित करते हैं। भारत–अमेरिका परमाणु समझौता (2008) ने भारत को वैश्विक असैन्य परमाणु तंत्र में शामिल किया। अमेरिका भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देता है, जो क्षेत्रीय संतुलन को चीन की ओर से चुनौती के विरुद्ध मजबूत करता है। पाकिस्तान को लेकर अमेरिका की नीति अधिक अस्थिर रही है। रूस भारत का पारंपरिक सैन्य साझेदार हैं, दोनो के मध्य परमाणु तकनीक, रक्षा उपकरण और ऊर्जा क्षेत्र में गहरा सहयोग है। पाकिस्तान के साथ भी हाल के वर्षों में संबंध बढ़े हैं, विशेषकर आतंकवाद और रक्षा प्रशिक्षण को लेकर। चीन दक्षिण एशिया में परमाणु असंतुलन का प्रमुख कारक है। पाकिस्तान का परमाणु कार्यक्रम चीन की तकनीकी सहायता से विकसित हुआ है। भारत–चीन सीमा विवाद, गलवान संघर्ष, और हिंद महासागर में शक्ति विस्तार ने भारत की परमाणु रणनीति को प्रभावित किया है। फ्रांस, ब्रिटेन, जापान भारत के साथ असैन्य परमाणु सहयोग कर रहे हैं। परमाणु अप्रसार के समर्थक लेकिन भारत को 'ज़िम्मेदार शक्ति' के रूप में स्वीकार करने की दिशा में सक्रिय हैं। दक्षिण एशिया का परमाणु परिदृश्य वैश्विक सुरक्षा चिंताओं का केंद्र बिंदु बनता जा रहा है। यहां वैश्विक शक्तियों की भूमिका निर्णायक है, लेकिन दीर्घकालिक शांति और स्थिरता तभी संभव है जब क्षेत्रीय राष्ट्र पारस्परिक विश्वास, संवाद और जिम्मेदारी की भावना के साथ मिलकर काम करें। परमाणु हथियार शक्ति का नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व का प्रतीक होने चाहिए, यही भविष्य का मार्ग है।

निष्कर्ष– दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण का परिदृश्य जटिल, अस्थिर और बहुआयामी है। भारत, पाकिस्तान और चीन जैसे परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की उपस्थिति इस क्षेत्र को न केवल सामरिक रूप से संवेदनशील बनाती है, बल्कि वैश्विक परमाणु संतुलन के लिए भी एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करती है।

पिछले कुछ दशकों में इस क्षेत्र में परमाणु हथियारों का विकास मात्र सैन्य शक्ति प्रदर्शन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सामरिक आत्मविश्वास, और वैश्विक ताकतों के साथ संवाद की मुद्रा भी बन गया है। परमाणु हथियारों की संख्या और तकनीकी परिष्कार (जैसे MIRV, हाइपरसोनिक मिसाइलें, स्वचालित रिटालिएशन तंत्र) में वृद्धि एक चिंताजनक प्रवृत्ति रही है। भारत की निष्क्रिय प्रतिरोध (No First Use) नीति और पाकिस्तान की पहले प्रयोग की संभावना (First Use Possibility) इस क्षेत्र को अनिश्चितता से भर देती हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच असमान सामरिक संसाधन और क्षमता वृद्धि से अस्थिरता बढ़ रही है। दोनों देशों द्वारा नई परमाणु प्रणालियाँ विकसित करने से हथियारों की होड़ तेज हो रही है। आतंकवादी संगठनों द्वारा परमाणु सामग्री या तकनीक तक पहुँच की संभावना एक गंभीर खतरा बनी हुई

है। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय वार्ताओं में निष्कर्षों की कमी से पारस्परिक विश्वास का क्षरण हुआ है। इसलिए ट्रैक–2 डिप्लोमेसी, हॉटलाइन संचार, और नियमित सैन्य वार्ता को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। गलतफहमी के कारण संभावित युद्ध की आशंका को कम करने के लिए पारदर्शिता और सूचना साझा करना ज़रूरी है। क्षेत्रीय परमाणु हथियार–मुक्त क्षेत्र की संभावना पर नए सिरे से विचार किया जाना चाहिए। भारत और पाकिस्तान को परमाणु अप्रसार संधियों (जैसे CTBT, FMCT) में रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रीकरण का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि क्षेत्रीय शक्तियाँ सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणा से हटकर साझा अस्तित्व और स्थायी शांति की ओर बढ़ती हैं या नहीं। सैन्य समाधान से अधिक आवश्यक है कूटनीतिक सम्वाद, क्षेत्रीय सहयोग, और आपसी समझ। यदि दक्षिण एशिया को स्थायी शांति की ओर अग्रसर होना है तो परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ाने की जगह उन्हें अप्रसारित करने और पारदर्शिता बढ़ाने पर ज़ोर देना होगा। वैश्विक शक्तियों की निष्पक्ष मध्यस्थता और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की सक्रिय भागीदारी इस दिशा में सहायक हो सकती है।

अनुशंसाएँ–

- दक्षिण एशिया में भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच नियमित परमाणु संवाद और विश्वास निर्माण उपाय (CBM) स्थापित किए जाने चाहिए जिससे परमाणु दुर्घटनाओं की आशंका कम हो सके।
- परमाणु शक्तियाँ अपनी परमाणु नीति, हथियारों की संख्या और रणनीतियों में पारदर्शिता लाकर गलतफहमी की स्थिति को टाल सकती हैं।
- भारत द्वारा अपनाई गई प्रथम प्रयोग न करने की नीति को दृढ़ता से बरकरार रखा जाना चाहिए और अन्य देशों को भी इसी नीति को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- परमाणु हथियारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सभी देशों को अत्याधुनिक और विश्वसनीय कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम अपनाना चाहिए।
- दक्षिण एशियाई देशों को व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि और अप्रसार संधि पर संवाद के नए द्वार खोलने चाहिए जिससे वैश्विक समुदाय में विश्वास उत्पन्न हो।
- एक क्षेत्रीय मंच की स्थापना की जानी चाहिए जो परमाणु, साइबर और पारंपरिक सुरक्षा पर समन्वित चर्चा और सहयोग को बढ़ावा दे।
- परमाणु हथियारों की होड़ को सीमित करने के लिए सैन्य बजट का अधिक हिस्सा सामाजिक विकास जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और जलवायु सुरक्षा की ओर मोड़ा जाए।
- देशों को पारंपरिक सैन्य क्षमताओं और परमाणु हथियारों के बीच संतुलन बनाए रखने हेतु नीतिगत संयम अपनाना चाहिए।
- परमाणु बुनियादी ढांचे को साइबर खतरों से सुरक्षित रखने हेतु भारत, पाकिस्तान एवं अन्य क्षेत्रीय देशों को साझा साइबर सुरक्षा तंत्र विकसित करना चाहिए।
- सरकारी स्तर के साथ–साथ Track-II डिप्लोमेसी (गैर–सरकारी कूटनीति) को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और पूर्व अधिकारियों के बीच संवाद हो सके।
- क्षेत्रीय स्तर पर साझा आपातकालीन प्रतिक्रिया रणनीतियाँ विकसित की जाएँ जो किसी दुर्घटना या संकट के समय त्वरित सहयोग सुनिश्चित कर सकें।

- नागरिक समाज और युवाओं को परमाणु शस्त्रीकरण के खतरों और शांति के महत्व पर जागरूक करना आवश्यक है जिससे भविष्य की पीढ़ियाँ रणनीतिक रूप से अधिक उत्तरदायी बनें।
- परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग हेतु वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए, जैसे न्यूक्लियर मेडिसिन, ऊर्जा उत्पादन, और विकिरण सुरक्षा में संयुक्त अनुसंधान।

सन्दर्भ सूची –

1–राजगोपालन, आर. (2008). भारत की परमाणु नीति, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ISBN: 9780195695712

2– खन्ना, वी.एन. (2010). अंतरराष्ट्रीय राजनीति, वीके पब्लिकेशन, ISBN: 9788125918326

3– गुप्ता, आर. (2015). दक्षिण एशिया की सुरक्षा रणनीतियाँ, प्रभात प्रकाशन, ISBN: 9788172346545

4– त्रिपाठी, एस.के. (2018). भारत–पाक संबंध और सामरिक दृष्टिकोण, हिन्दी बुक्स सेंटर, ISBN: 9789387914096

5– शर्मा, किरण. (2020). परमाणु शक्ति और विश्व राजनीति, न्यू एज पब्लिकेशन्स, ISBN: 9789382461915

6– एकेडेमिक डिफेंस रिसर्च. (2023). दक्षिण एशिया में परमाणु खतरे, ISBN: 9789390589312

7 Subrahmanyam, K. India and the Nuclear Bomb: Strategic Analysis, New Delhi: Lancer, 1998. ISBN: 9788170622171

8 Tellis, A. J. India's Emerging Nuclear Posture, Santa Monica: RAND Corporation, 2001. ISBN: 9780833030051

9 Perkovich, George. India's Nuclear Bomb: The Impact on Global Proliferation, University of California Press, 1999. ISBN: 9780520232105

10 Krepon, M. & Gagne, C. The Stability-Instability Paradox: Nuclear Weapons and Brinkmanship in South Asia, Stimson Center, 2001. ISBN: 9780970213023

11 Davis, Z. S. The Role of Nuclear Weapons in Pakistan's Defense Strategy, Naval Postgraduate School, Monterey, 2002. (Government document, no ISBN)

12 Ganguly, S. & Fair, C. C. Deadly Impasse: Indo-Pakistani Relations at the Dawn of a New Century, Cambridge University Press, 2016. ISBN: 9781107169243

13 UNIDIR. Nuclear Weapons in South Asia: Prospects for Arms Control, Geneva: UNIDIR, 2003. ISBN: 9789290451641

14 IAEA. Safeguards Statement for 2020, Vienna: IAEA, 2021. https://www.iaea.org

15 Menon, P. The Strategy Trap: India and Pakistan Under the Nuclear Shadow, Wisdom Tree, 2018. ISBN: 9788183284991

16 Art, R. J. & Waltz, K. N. The Use of Force: Military Power and International Politics, Rowman & Littlefield, 2009. ISBN: 9780742565863